ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

# गाय,भैसों में सींग व पूंछ संबंधी मुख्य बीमारियां एवं उपचार

*डॉ. नितिन राज सिंह, डॉ. विकास सचान एवं डॉ. अवनीश सिंह*

***पशु शल्य चिकित्सा और रेडियाधर्मिता विभाग, दुवासु, मथुरा***

सींग व पूँछ पशु के शरीर में सुंदरता की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण अंग हैं। भैंसों में खासतौर पर सींगों की सुंदरता उसकी कीमत को बढ़ाती है और उसकी नस्ल का बोध भी कराती है। यह दोंनों अंग विभिन्न प्रकार की चोटों और बीमारियों के लिए बहुत संवेदनशील हैं। सावधानी एवं समय पर उपचार द्वारा हम पशु की सुंदरता और कीमत को बनाए रख सकते हैं।

सींग की मुख्य बीमारियाँ एवं होने वाले घाव:

## 1. सींग का कैंसर-

यह बीमारी भारत समेत दुनिया के कुछ अन्य देशों जैसे सुमात्रा, ईराक और ब्राजील में पाई जाती है। यह बीमारी भैंसों की अपेक्षा गाय व बैलों में अधिक पाई जाती है। इसमें सींग के अंदर कैंसर के उतक भर जाते है और सींग नरम पड़ जाता है। इसके बाद वह कमजोर हो कर नीचे की तरफ लटक जाता है। पशु अत्याधिक दर्द महसूस करता है और उस सींग की तरफ सिर झुका कर रखता है। अन्य लक्षणों में पशु का सिर हिलाना, सींग को दीवार या खूंटे से रगड़ना, नाक में से रक्त-मिश्रित द्रव्य आना आदि शामिल हैं। कई बार सींग टूट कर नीचे गिर जाता है। इसके बाद घाव बन जाता है और उस पर मक्खियाँ बैठने लगती है। अंत में सींग के स्थान पर सड़ा हुआ कैंसर का माँस बच जाता है जिसमें कीड़े पड़ जाते हैं।

## उपचार एवं सावधानियां:

किसी पशुचिकित्सक से संपर्क करके सर्वप्रथम सर्जरी द्वारा वह सींग व कैंसर का माँस जड़ से निकालवा देना चाहिए। इसके बाद घाव पर प्रतिदिन, बिटाडीन की पट्टी करके स्प्रे किया जाता है। सींग के घाव पर दिन में 3-4 बार मक्खी दूर भागने वाले और घाव को भरने में मदद करने वाले स्प्रे को पशुचिकित्सक की सलाह से अवश्य लगाना चाहिए ताकि उसमें कीड़े न पड़े। कैंसर रोधी दवाओं का उपयोग भी किया जाता है । कैंसर रोधी दवाईयों का पूरा कोर्स करवाना चाहिए अन्यथा कैंसर का माँस फिर से बढ़ जाता है।

## 2. सींग का खोल/पोली उतरना:

यह परेशानी पशु की सींग में चोट लगने के कारण होती है । सींग में चोट पशुओं की आपसी लड़ाई के दौरान, सींग के पास खुजाने के लिए बेल में फंसने, चिकित्सा अथवा गर्भाधान के दौरान कटघरे में सींग फँसने से अथवा किसी अन्य कारण से लग सकती है ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

**उपचार एवं सावधानियां:**

खोल उतरने के बाद बहुत अधिक खून निकलता है और पशु को बहुत अधिक दर्द होती है। खून रोकने के लिए टिंक्चर बेन्जोइन की पट्टी करनी चाहिए तथा उस पर घाव भरने एवं मक्खी दूर रखने वाल्व स्प्रे का उपयोग करना चाहिए । जब खून बंद हो जाए उसके बाद घाव भरने तक बीटाडीन से पट्टी करके स्प्रे करना चाहिए। इस दौरान पशु को 3-5 दिन तक पशुचिकित्सक की निगरानी में एंटीबायोटिक एवं दर्द के टीके अवश्य देने चाहिए।

**3. सींग का टूटना:**

कई बार सींग में चोट लगने से सींग बीच से टूट जाता है। इस अवस्था में सर्जन को दिखाना चाहिए और संभव हो तो वह सींग जड़ से ही निकलवा देना चाहिए। घाव की देखभाल पशुचिकित्सक सर्जन के बताए अनुसार ही करनी चाहिए और आवश्यक दवाइयाँ प्रतिदिन लगवानी चाहिए।

**पूंछ से संबंधित मुख्य बीमारियाँ एवं घाव:**

**1.लैदरी/ पुंछ का सूखना/ डेगनाला रोग/ गैंग्रीन**

यह रोग भैंसों में अधिक पाया जाता है। यह रोग कुछ फंगस (कवक) के कारण होता है। यह मुख्यतः धान की पराली में पाया जाता है। इसमें पूंछ का निचला हिस्सा धीरे सूखने लगते है एवं यह समस्या पूंछ की जड़ की तरफ बढ़ती जाती है। पूंछ के साथ साथ कभी कभी कानों का पिन्ना भी सूखने लगता है।

**उपचारः**

पशुओं को नमी वाला व फंगस लगा तूड़ा/पराली नहीं खिलानी चाहिए। शुरूआत में दवाइयों से भी रोग ठीक हो जाता है। इसमें कुछ होमियोपैथिक दवाएँ भी काम में आती है । इसके अलावा पशु को नहलाते समय उसकी पूंछ को अच्छी तरह रगड़ कर धोना और उस पर सरसों व तारपीन के तेल की मालिश करना भी काफी लाभदायक सिद्ध होता है। पेंटासल्फेट मिश्रण पहले दिन 60 ग्रा. व इसके बाद 30 ग्रा. अगले दस दिन तक पशु को गुड़/आटे में मिलाकर खिलाने, एंटीबायोटिक औषधियों के उपयोग करने तथा पूंछ पर नाइट्रोग्लिसरिन क्रीम की मालिश भी इस रोग में काफी लाभदायक है। कई बार दवाइयों से ईलाज संभव ना हो पाने की दशा में पूँछ का रोगग्रस्त हिस्सा सर्जन द्वारा कटवा देना चाहिए।

**2.पूंछ में चोट लगना:**

कम जगह में अधिक पशु रखने पर पशु एक दूसरे की पूँछ पर पैर रख देते हैं। बाड़ के तार या कांटेदार झाड़ियों में पूंछ के उलझने से अथवा ने कारणों से पूंछ में चोट लग सकती है ।

**उपचार:**

यदि चोट अधिक गहरी है और खून नहीं रूक रहा है तो पूंछ की जड़ में पट्टी बांध देनी चाहिए ताकि खून का बहना रूक सके। पूंछ के घाव का विषेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यह निरंतर पशु के गोबर

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

व पेशाब के संपर्क में रहता है। अतः पशुचिकित्सक की मदद से प्रतिदिन घाव को साफ करके बीटाडीन, नियोस्पोरीन पाऊडर से पट्टी करके स्प्रे करना चाहिए। यदि घाव ठीक नहीं हो रहा है और घाव से नीचे की पूंछ ठंडी पड़ रही है तो उसे सर्जन द्वारा कटवा देना ही बेहतर इलाज है।

उचित प्रबंधन व देखरेख द्वारा हम पशु को सींग व पूंछ की विभिन्न बीमारियों व चोटों से बचा सकते है। पशुओं के बीच में उपयुक्त दूरी होनी चाहिए ताकि वे आपस में लड़ न सके और न ही एक दूसरे की पूंछ पर पैर रख सकें। घाव होने पर इसकी नियमित देखभाल करनी चाहिए और उसे गंदगी व मक्खियों से बचाना चाहिए। इससे घाव जल्दी भरता है और अनावष्यक परेशानी से पशु व पशुपालक दोनों बच जाते हैं